

आक्रामक जलीय खरपतवारों का उन्मूलन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में साइरटोबैगस साल्वनियिा नामक एक बाह्य प्रजाति के बीटल ने मध्य प्रदेश के बैतूल ज़िले में तवा नदी पर बने सारणी जलाशय (सतपुड़ा बाँध) से एक आक्रामक खरपतवार प्रजाति, [साल्वनियिा मोलेस्टा](#) को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया है।

मुख्य बटुः

- जबलपुर स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परषिद-खरपतवार अनुसंधान नदिशालय (ICAR-DWR) के वैज्ञानिकों ने खुलासा कयिा कि साइरटोबैगस साल्वनियिा, एक ब्राज़ीलियिाई जैव कारक जो वशिष रूप से साल्वनियिा मोलेस्टा को लक्षति करता है, को गहन शोध और आवश्यक सरकारी अनुमोदन के बाद भारत में आयात कयिा गया था।

साल्वनियिा मोलेस्टा (Salvinia molesta)

- यह एक जलीय फर्न है जो दक्षणि-पूरवी ब्राज़ील में पाया जाता है। इसे वशिाल साल्वनियिा या करबिा खरपतवार के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इसने ज़मिाबवे और ज़ाम्बयिा के बीच करबिा झील के एक बड़े क्षेत्र को दूषति कर दिया था।
- साल्वनियिा की वशिषताओं में छोटे, शाखाओं वाले, तैरते हुए तने शामिल हैं, जनिमें पत्ती की सतह पर रोम होते हैं, लेकनि कोई मूल जड़ नहीं होती है।
- पत्तयिाँ त्रिगुणति चकरों में व्यवस्थति होती हैं, जसिमें एक पत्ती बारीक वभिाजति, जड़ जैसी और लटकती हुई होती है, जबकि शेष अन्य दो हरी, अवृत या छोटी-पेटयिलेट एवं सपाट होती हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परषिद (Indian Council of Agricultural Research- ICAR)

- यह कृषि अनुसंधान और शकिषा वभिाग (DARE), कृषि और कसिान कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है।
- इसकी स्थापना 16 जुलाई, 1929 को हुई थी और इसे पहले इंपीरियल काउंसलि ऑफ एग्रीकल्चरल रसिर्च के नाम से जाना जाता था।
- इसका मुख्यालय नई दलिली में है।
- यह पूरे देश में बागवानी, मत्स्य पालन और पशु वज्जिान सहति कृषि में अनुसंधान तथा शकिषा के समन्वय, मार्गदर्शन एवं प्रबंधन के लयि सर्वोच्च नकिय है।